

पद २५४

(राग: काफ़ी - ताल: दीपचंदी)

मै तोरे हीन दीन कैसे छुटैयां । पापपुण्य कछु देखन आया ॥ध्रु॥
पावन किये पापी अजामिल । दुजा पावन किये चोखामेल ।
पावन किये रोहिदास चम्हारिया ॥१॥ पावन किये मीराबाई । दुजा
पावन किये सजन कसाई । पावन गजराज गुसैय्या ॥२॥ मानिक
के प्रभु नाथ कृष्णजी । कर जोर करता है अर्जी । तुम्हारे चरनको
ध्यास लगय्या ॥३॥